महाकाली साधना की यह जानकारी यूट्यूब चैनल -साधना और जीवन रहस्य-के शिवमजी द्वारा दी गई है

साधना अवधि–11 दिन,दिशा–पूर्व या उत्तर, माला- काली हकीक माला(प्राणप्रतिष्ठित),यंत्र,–महाकाली यंत्र,संकल्प–अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए साधना करने संकल्प लें(साधना–सिध्दी प्राप्त करने के लिए,सुखसमृद्धि,दुश्मनो से सुरक्षा,प्रेत बाधा से मुक्ति,इन मनोकामनापूर्ति के लिए साधना करें)

गुरु– यदि गुरु ना हो या हो तब भी शिवजी का पूजन आवश्यक है

विधि :पूजन के लिए नहाधोकर साफ-सुथरे आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा में मुंह करके बैठ जाएं।अब अपनी शुध्दि के लिए आचमन करें हाथ में जल लिए हुए आप इन मंत्रों के साथ ध्यान करें - ॐ केशवाय नम: ॐ नाराणाय नम: ॐ माधवाय नम: ॐ ह्रषीकेशाय नम: और जल को तीन बार में तीन बूंद पीये इस प्रकार आचमन करने से आप शुध्द हो जाऐंगे

- **तांत्रोक्तभैरवकवच** ||हस्त्रारेमहाचक्रेकर्पूरधवलेगुरुः,पातुमांबटुकोदेवोभैरवःसर्वकर्मसु ||१||
- पूर्वस्यामसितांगोमांदिशिरक्षतुसर्वदा,आग्नेयांचरुरुःपातुदक्षिणेचण्डभैरवः ||२||
- नैऋत्यांक्रोधनःपातुउन्मत्तःपातुपश्चिमे,वायव्यांमांकपालीचनित्यंपायात्सुरेश्वरः||३||
- भीषणोभैरवःपातुउत्तरास्यांतुसर्वदा,संहारभैरवःपायादीशान्यांचमहेश्वरः ||४||
- ऊर्ध्वंपातुविधाताचपातालेनन्दकोविभुः,सद्योजातस्तुमांपायात्सर्वतोदेवसेवितः||५||
- रामदेवोवनान्तेचवनेघोरस्तथावतु,जलेतत्पुरुषःपातुस्थलेईशानएवच ||६||
- डाकिनीपुत्रकःपातुपुत्रान्मेंसर्वतःप्रभुः,हाकिनीपुत्रकःपातुदारास्तुलाकिनीसुतः||७||
- पातुशाकिनिकापुत्रःसैन्यंवैकालभैरवः,मालिनीपुत्रकःपातुपशून्श्वान्गंजास्तथा ||८||
- महाकालोऽवतुक्षेत्रंश्रियंमेसर्वतोगिरा,वाद्यम्वाद्यप्रियःपातुभैरवोनित्यसम्पदा|
-
- सामग्री अपने पास रख लें।बायें हाथ मे जल लेकर, उसे दाहिने हाथ से ढ़क लें।मंत्रोच्चारण के साथ जल को सिर, शरीरऔर पूजन सामग्री पर छिड़क लें या पुष्प से अपने ऊपर जलकोछिडके।इसमन्त्रकोबोलतेहुएसभीसामग्रियोंपरजलछिड़केऐसाकरनेसेसामग्रीकेसभीअशुध्दियादूरहोजातीहैंइसमंत्रकाउपयोगसभीपूजनऔरसाधनाओमेसामग्रियोंकोशुध्दकरनेमेंकरसकतेहैं - **ॐह्रींत्रिपुटित्रिपुटिकठकठआभिचारिक-दोषंकीटपतंगादिस्पृष्टदोषंक्रियादिदूषितंहनहननाशयनाशयशोषयशोषयहुंफट्स्वाहा.**
- **ॐअपवित्रःपवित्रोवासर्वावस्थांगतोऽपिवा।यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षंसबाह्याभ्यन्तरःशुचिः॥**

(निम्नलिखितमंत्रबोलतेहुएशिखाकोगांठलगाये / स्पर्शकरे)ॐचिद्रूपिणिमहामाये! दिव्यतेजःसमन्विते।तिष्ठदेवि!,शिखामध्येतेजोवृद्धिंकुरुष्वमे॥

(अपनेमाथेपरकुंकुमयाचन्दनकातिलककरें)

ॐचन्दनस्यमहत्पुण्यं, पवित्रंपापनाशनम्।,आपदांहरतेनित्यं, लक्ष्मीस्तिष्ठतिसर्वदा॥

(अपनेसीधेहाथसेआसनकाकोनाछुएऔरकहे)

ॐपृथ्वी! त्वयाधृतालोकादेवि! त्वंविष्णुनाधृता।त्वंचधारयमांदेवि! पवित्रंकुरुचासनम्॥

संकल्पः- दाहिनेहाथमेजलले।मैं ....अमुक......... गोत्रमेजन्मा,.......... यहाँआपकेपिताकानाम.......... .... कापुत्र.......... निवासी........आपकापता......... आजसभीदेवी-देवताओंकोसाक्षीमानतेहुएमहाकालीकीपुजा, गणपतीऔरगुरुजीकीपुजामहाकाली माँ की कृपाप्राप्तिकेलिएकररहाहूँजलऔरसामग्रीकोछोड़दे।

ऋष्यादिन्यास:ॐश्रीमार्कंडेयमेधसऋषिभ्यांनमः - शिरसि (मंत्रपढ़तेहुएसरकोछुए)

ॐगायत्रीयादिनानाविधछन्दोभ्योनमः - मुखे (मुखकोछुए)ॐत्रिशक्तिरूपिणीचण्डिकादेवतायैनमः - हृदये(हृदयकोछुए)ॐऐंबीजायनमः - गुहेय (जांघपरछुए)ॐह्रींशक्तयायैशक्तय - पादयो (पैरोंकोछुए)ॐक्लींकीलकायनमः - नाभौ (नाभीकोछुए)ॐममचिंतितसकलमनोरथसिद्धयर्थेजपेविनियोगायनमः सर्वाङ्गे (सरसेपैरतकहाथघुमाए)

करन्यास:

ॐऐंअंगु"ठाभ्यांनमः,ॐह्रींतर्जनीभ्यांनमः,ॐक्लींमध्यमाभ्यांनमः,ॐऐंअनामिकाभ्यांनमः,ॐह्रींकनिष्ठीकाभ्यांनमः,ॐक्लींकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः**हृदयादिन्यास**:ॐऐंहृदयायनमः,ॐह्रींशिरसेस्वाहा,ॐक्लींशिखायैवषट्,ॐऐंकवचायहुम्,ॐह्रींनेत्रत्रयायवौषट्,ॐक्लींअस्त्रायफट्

दिङ्न्यास:ॐऐंप्राच्यैनमः ॐह्रींआग्नेय्यैनमः ॐक्लींदक्षिणायैनमः ॐऐंनैऋत्यैनमः,ॐह्रींप्रतिच्यैनमः ॐक्लींउधार्वयैनमः ॐह्रींक्लींभूम्यैनमः (आसनपरबैठे-बैठेसभीदिशाओमेंहाथघूमाऐ)

गणपतिकापूजनकरें।

सर्वमंगलमांगल्येशिवेसर्वार्थसाधिके।शरण्येत्र्यंबकेगौरीनारायणिनमोअस्तुतेॐश्रीगायत्र्यैनमः।ॐसिद्धिबुद्धिसहितायश्रीमन्महागणाधिपतयेनमः।ॐलक्ष्मीनारायणाभ्यांनमः।ॐउमामहेश्वराभ्यांनमः।ॐवाणीहिरण्यगर्भाभ्यांनमः।ॐशचीपुरन्दराभ्यांनमः।ॐसर्वेभ्योदेवेभ्योनमः।ॐसर्वेभ्योब्राह्मणेभ्योनमः।ॐभ्रंभैरवायनमः

फिर।गुरुपुजनकरलें

ॐगुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुःगुरुर्देवोमहेश्वरः।गुरुःसाक्षातपरब्रह्मतस्मैश्रीगुरवेनमः॥ॐश्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः।ॐश्रीगुरवेनमः।आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

गायत्रीदेवी से प्रार्थना करें ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयो न: प्रचोदयात् ।।

अब काली चालिसा का पाठ करें

श्री काली चालीसा॥॥दोहा ॥॥

जयकालीकलिमलहरण, महिमा अगम अपार
महिषमर्दिनी कालिका, देहु अभय अपार ॥

अरि मद मान मिटावन हारी । मुण्डमाल गल सोहतप्यारी ॥अष्टभुजी सुखदायक माता । दुष्टदलन जगमें विख्याता ॥1॥

भाल विशाल मुकुट छवि छाजै । कर में शीश शत्रु कासाजै॥दूजे हाथ लिए मधु प्याला । हाथ तीसरे सोहत भाला ॥2॥

चौथे खप्पर खड्ग कर पांचे । छठे त्रिशूल शत्रु बल जांचे ॥सप्तमकरदमकत असि प्यारी । शोभा अद्भुत मात तुम्हारी ॥3॥

अष्टम कर भक्तन वर दाता । जग मनहरण रूप ये माता ॥भक्तन में अनुरक्त भवानी । निशदिन रटें ऋृषी-मुनि ज्ञानी ॥4॥

महशक्ति अति प्रबल पुनीता । तू ही काली तू ही सीता ॥पतित तारिणी हे जग पालक । कल्याणी पापी कुल घालक ॥5॥

शेष सुरेश न पावत पारा । गौरी रूप धर्यो इक बारा ॥तुम समान दाता नहिं दूजा । विधिवत करें भक्तजन पूजा ॥6॥

रूप भयंकर जब तुम धारा । दुष्टदलनकीन्हेहुसंहारा ॥नाम अनेकन मात तुम्हारे । भक्तजनों के संकट टारे ॥7॥

कलि के कष्ट कलेशन हरनी । भव भय मोचन मंगल करनी ॥महिमा अगम वेद यश गावैं । नारद शारद पार न पावैं ॥8॥

भू पर भार बढ्यौ जब भारी । तब तब तुम प्रकटींमहतारी ॥आदि अनादि अभय वरदाता । विश्वविदितभव संकट त्राता ॥9॥

कुसमय नाम तुम्हारौलीन्हा । उसको सदा अभय वर दीन्हा ॥ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा । काल रूप लखितुमरोभेषा ॥10॥

कलुआभैंरों संग तुम्हारे । अरि हित रूप भयानक धारे ॥सेवक लांगुर रहत अगारी । चौसठ जोगन आज्ञाकारी ॥11॥

त्रेता में रघुवर हित आई । दशकंधर की सैननसाई ॥खेला रण का खेल निराला । भरा मांस-मज्जा से प्याला ॥12॥

रौद्र रूप लखि दानव भागे । कियौ गवन भवन निज त्यागे ॥तब ऐसौ तामस चढ़ आयो । स्वजनविजन को भेद भुलायो ॥13॥

ये बालक लखि शंकर आए । राह रोक चरनन में धाए ॥तब मुख जीभ निकर जो आई । यही रूप प्रचलित है माई ॥14।

बाढ्योमहिषासुर मद भारी । पीड़ित किए सकल नर-नारी ॥करूण पुकार सुनी भक्तन की । पीर मिटावन हित जन-जन की ॥15॥

तब प्रगटी निज सैनसमेता । नाम पड़ा मां महिष विजेता ॥शुंभ निशुंभ हने छन माहीं । तुम सम जग दूसरकोउनाहीं ॥16॥

मान मथनहारी खल दल के । सदा सहायक भक्त विकल के ॥दीन विहीन करैं नित सेवा । पावैं मनवांछित फल मेवा ॥17॥

संकट में जो सुमिरन करहीं । उनके कष्ट मातु तुम हरहीं ॥प्रेम सहित जो कीरतिगावैं । भवबन्धनसोंमुक्तीपावैं ॥18॥

काली चालीसा जो पढ़हीं । स्वर्गलोकबिनु बंधन चढ़हीं ॥दया दृष्टि हेरौजगदम्बा । केहि कारण मां कियौविलम्बा ॥19॥

करहुमातुभक्तन रखवाली । जयति जयति काली कंकाली ॥सेवक दीन अनाथ अनारी । भक्तिभावयुति शरण तुम्हारी ॥20॥

॥॥दोहा॥॥

प्रेम सहित जो करे, काली चालीसा पाठ ।
तिनकी पूरन कामना, होय सकल जग ठाठ ॥

अब सबसे पहले शिव जी से प्रार्थना करके एक माला ॐनमःशिवाय की प्रतिदिन जपें फिरनीचे दिए किसी भी एक मंत्र का जाप करें

काली माता का मंत्र

जीवन के सभी संकटो को दूर करने के लिए इस मंत्र का जाप करना चाहिए-

1. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै:

Om aim Hreem kleem Chamundaye Vichchay

महाकाली को प्रसन्न कर मनोकामना पूरी करने के लिए इन मंत्रों का जाप करना चाहिए-

2. कालीकाली महाकाली कालिकेपरमेश्वरी ।
सर्वानन्दकरी देवी नारायणि नमोऽस्तुते ।।

Kali Kali mahakali kalike paramesvari Sarvananda kari devi narayani namostute 3. ॐ क्रींकाल्यैनमः (**Om Krimkalyai namah**

)

मृत्यु या शत्रु के भय से बचने के लिए काली मां के इस मंत्र का जाप करना चाहिए-

4. क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके ! क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा

Kring Kring Kring hunm hunm hreem hreem Dakshin Kalike Kring Kring Kring Hung Hung Hring Hring swaha

5. ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि कालिके स्वाहा **Om Hrim Shreem Kreem Parameshwari kalike Swaha**

6**. मंत्र Om kalike namah**

ॐ कालिके नम:।।

7**.** क्रीं क्रीं फट् स्वाहा **Kreem Kreem fatt swaha**

किसी विशेष सिध्दी या साधना में सफलता के लिए महाकाली के इस मंत्र का 1**,2,3,4** या 5 लाख जप अनुष्ठान संपन्न करें

किसीभीप्रकारकाहवनकरनेकेलिएकुछबातोंकाध्यानरखनाजरूरीहोताहै,
हवनकुंडमिट्टीकायाकिसीधातुकासीमेंटकाचौमुखायागोलभीहोसकताहैआजकलबिजलीकाभीहवनकुंडबाजारमेंउपलब्धहैलेकिनउसमेंभीपहलेकपूरसेअग्निजलानाचाहिएफिरचाहेतोविघुतसेजलाये,
हवनकीलकड़ीआमकीसबसेआसानीसेउपलब्धहोजातीहैइसलिएआमकीहीलकड़ीलेआयें,हवनसामग्रीमेंघी,फल,अन्न,मीठा,
लकड़ी,औरकुछऔषधीयपौधेकेटुकड़ेहोतेहैंजोकिरेडिमेडहवनसामग्रीकेपैकेटमेंपहलेसेहीमिलादीयजातेहैंहवनसामग्रीमेंनवग्रहलकड़ीभीपहलेसेमिलादीजातीहैइसलिएआपबाजारसेहीपैकेटलेआयेऔरउसमेंघरपरघी,पूरेसाबुतचावलजोटूटेफूटेनाहो, जई,शकर,मिलालें,

अबहवनमेंजिनमंत्रोंसेसामान्यतौरपरआहुतियांदीजातीहैंवहइसप्रकारहै.........1 .ॐ आग्नेय नम: स्वाहा-ॐ अग्निदेव ताम्योनम: स्वाहा

2..ॐ गणेशाय नम: स्वाहा,ॐगौरियाय नम: स्वाहा, ॐ नवग्रहाय नम: स्वाहा, ॐ दुर्गाय नम: स्वाहा, ॐ महाकालिकाय नम: स्वाहा, ॐ हनुमते नम: स्वाहा, ॐ भैरवाय नम: स्वाहा, ॐ कुल देवताय नम: स्वाहा,ऊँकुलदेवीयैनमःस्वाहा, ॐ स्थान देवताय नम: स्वाहा, ॐ ब्रह्माय नम: स्वाहा, ॐ विष्णुवे नम: स्वाहा, ॐ शिवाय नम: स्वाहा, ॐ जयंती मंगलाकालीभद्रकालीकपालिनी दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा, स्वधानमस्तुति स्वाहा, ॐ ब्रह्मामुरारीत्रिपुरांतकारी भानु: क्षादी: भूमि सुतो बुधश्च: गुरुश्चशक्रे शनि राहु केतोसर्वेग्रहा शांति कर: स्वाहा, ॐ गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवामहेश्वर: गुरु साक्षात परब्रह्मातस्मै श्री गुरुवे नम: स्वाहा,

अबउसमूलमंत्रकोबोलतेहुएदशांशआहुतियांदेंजिसकाआपजापकररहेथेजैसेआपऊँश्रींह्रींश्रींमहालक्ष्म्यैनमःकाजापका 10 मालाजापकियातोआप 1
मालाऊँश्रींह्रींश्रींमहालक्ष्म्यैनमःस्वाहाबोलकरहवनकरेंगे,मंत्रकादशांशहवनआहुतियांदेनेकेबादआगेनिम्नमंत्रसेआहुतिदेनाहै.

ॐ त्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिंम्पुष्टिवर्धनम्/ उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्मृत्युन्जाय नम: स्वाहा,ऊँसर्वपितृनमःस्वाहा, ॐ शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे, सर्व स्थार्ति हरे देवि नारायणी नमस्तुते।

स्विष्टकृत होम : जाने-अनजाने में हवन करते समय जो भी गलती हो गयी हो, उसके प्रायश्चित के रूप में गुड़ व घृत की आहुति दें |**मंत्र - ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा, इदंअग्नयेस्विष्टकृते न मम**

अब प्लेट में बची हुई हवन सामग्री को निम्न मंत्र बोलते हुए तीन बार आहुती देकर खत्म कर दें (1) ॐ श्रीपतये स्वाहा(२) ॐ भुवनपतये स्वाहा |(३) ॐ भूतानांपतये स्वाहा |

हवन के बादनारियलकेअंदरछेदकरकेथोड़ासाघीडालकरउसकेउपरसिंदूरलगाकर,कलावाबांधकर, साथमेंलौंग, सुपारी, जायफल,मिठाप्रसादजोभीआपनेबनायाहैउसेनीचेलिखेमंत्रबोलतेहुएहवनकुंडमेंअर्पितकरसकतेहैं

मंत्र बोले- 'ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदम्पुर्णातपूण्यमुदच्यते, पुणस्यपूर्णमादायपूर्णमेलविसिस्यते स्वाहा।

ॐ शांति: शांति: शांति: |

अबअपनेइष्टदेवताकीआरतीकरें....

जैसेजयजगदीशहरे,याजयअम्बेगौरी.....

कर्पुरगौरंकरुणावतारंसंसारसारंभुजगेन्द्रहारंसदावसन्तंहृदयारविंदेभवं भवानी सहितंनमामि.

भस्मधारणम : यज्ञकुंड से भस्म लेकर सभी लोग स्वयं को तिलक करें**प्रदक्षिणा:** सभी लोग हवनकुंड की 3 परिक्रमा करें | **यानिकानि च पापानिजन्मान्तरकृतानि च |तानिसर्वाणिनश्चन्तुप्रदक्षिण: पदेपदे ||साष्टांग प्रणाम :** जितने सदस्य साथ हो सभी साष्टांग प्रणाम करेंगे |**प्रार्थना :** विश्व कल्याण के लिए हाथ जोडकर प्रार्थना करें |**सर्वेभवन्तुसुखिन: सर्वेसन्तुनिरामया: |सर्वेभद्राणिपश्यन्तुमाकश्चिददुःखभागभवेत् ||क्षमा प्रार्थना :** पूजन, जप, हवन आदि में जो गलतियाँ हो गयी हों , उनके लिए हाथ जोड़कर सभी लोग क्षमा प्रार्थना करें **ॐ आवाहनं न जानामि न जानामिविसर्जनम |पूजांचैव न जानामिक्षमस्वपरमेश्वरी ||ॐ मंत्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनंसुरेश्वरि|यत्पूजितं माया देवीं परिपूर्ण तदस्तु में ||**

विसर्जनम : थोड़े-से अक्षत लेकर देव स्थापन और हवन कुंड में निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए चढायें - **ॐ गच्छगच्छसुरश्रेष्ठस्वस्थानेपरमेश्वरी |**

यत्रब्रम्हादयोदेवी: तत्रगच्छहुताशन |

महाकाली साधना की यह जानकारी यूट्यूब चैनल -साधना और जीवन रहस्य-के शिवमजी द्वारा दी गई है